पाठ 2

सल्तनत काल की शुरुआत

तराइन के द्वितीय युद्ध में पृथ्वीराज चैहान की पराजय के पश्चात दिल्ली में तुर्क शासकों का राज्य स्थापित हो गया। इन तुर्क शासकों का रहन-सहन, भाषा, धर्म तथा शासन करने का तरीका भारतीय शासकों से अलग था। तुर्क शासक सुल्तान की उपाधि धारण करते थे। इन्होंने दिल्ली को शासन का केन्द्र बनाया और लगभग 320 साल तक शासन किया।

मोहम्मद गोरी की मृत्यु 1206 ई0 में हो गई। उसके मृत्यु के समय तक लगभग पूरा उत्तर भारत उसके अधीन हो चुका था। उसने भारत में शासन चलाने के लिए गुलाम अधिकारी नियुक्त कर रखे थे। इन्हीं में एक योग्य गुलाम अधिकारी कुतुबुद्दीन ऐबक था। गोरी की मृत्यु का समाचार मिलने के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक ने स्वयं को भारत में तुर्क राज्य का शासक घोषित कर दिया। यह तुर्क राज्य अब

'तुर्क सल्तनत' कहलाया। अगले शासक इल्तुतमिश ने 1210 ई0 में सत्ता संभालने के साथ दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया। तब यह दिल्ली सल्तनत के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

आपको इस बात से हैरानी हो सकती है पर उन दिनों गुलाम रखने की प्रथा थी। तुर्किस्तान के युवकों को खरीद कर उन्हें युद्ध और प्रशासन के काम में प्रशिक्षण देकर सुल्तानों को बेचा जाता था। इसलिए वे गुलाम कहलाते थे। सुल्तान की सेवा में आने पर, योग्य और होनहार गुलामों को ऊँचे और ज़िम्मेदारी के पद भी सौंपे जाते थे। सुल्तान मोहम्मद गोरी की सेवा में भी ऐसे कई गुलाम थे और भारत में उसके राज्य का शासन चलाते थे।

सल्तनत (सुल्तनत) के सामने चुनौतियाँ

सरदार जिन्हें 'अमीर' कहा जाता था, तुर्क और अफगान कबीलों के होते थे। इनमें जातीय श्रेष्ठता तथा सल्तनत में ऊँचा स्थान पाने की भी होड़ रहती थी। इन्हीं अमीर सरदारों में से ही सुल्तान होता था। सुल्तान होने के लिए सैनिक योग्यता एवं शासकीय क्षमता का होना आवश्यक था। इन क्षमताओं के प्रभाव से वह सुल्तान बन सकता था और तभी तुर्क अमीरों का समर्थन प्राप्त करना भी सम्भव था। सुल्तान के लिए अमीर सरदारों का समर्थन और विश्वास जरूरी था। उसे हमेशा भय रहता था कि कहीं ये अमीर सरदार आपस में मिलकर कोई षड्यंत्र न करें। अतः सुल्तान का अधिकांश समय इन गुप्त षड्यंत्रों से बचने के उपायों में बीतता था। सुल्तानों को इन अमीर सरदारों में संतुलन भी बनाए रखना पड़ता था।

सुल्तान इस्लाम धर्मावलम्बी थे तथा बाहरी देशों से आए थे इसलिए भारतीय जनता पर शासन करने के लिए तुर्क अमीरों, उलेमा (धार्मिक वर्ग) आदि को खुश करने के साथ ही हिन्दुस्तानी जनता से भी सतर्क रहते थे क्योंकि सल्तनत में विद्रोहों का भय हमेशा बना रहता था।

सल्तनत कालीन शासकों ने आन्तरिक शान्ति बनाए रखने के लिए शासकीय प्रबन्ध तंत्र तथा राज्य विस्तार एवं बाह्य आक्रमणों से रक्षा के लिए मजबूत सैन्य संगठन भी बनाए। इनमें प्रारम्भिक तुर्क, खिलजी वंश, तुगलक वंश, सैय्यद वंश एवं लोदी वंश प्रमुख थे।

प्रारम्भिक तुर्क शासक-गुलाम वंश(1206 ई0 -1290 ई0)

कुतुबुद्दीन ऐबक

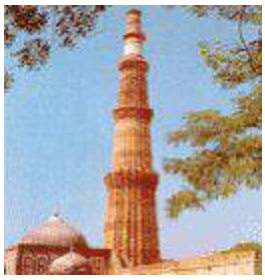

1206 ई. में मुहम्मद गौरी की मृत्यु के पश्चात उसका तुर्क गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक उत्तर भारत का पहला तुर्की शासक था। उसकी उदारता के कारण ही उसे लाखबख्श कहा जाता था, अर्थात वह लाखों का दान करने वाला दानप्रिय व्यक्ति था। भारतवर्ष में उसके जीवन का अधिकांश समय सैनिक गतिविधियों में ही बीता।

अढ़ाई दिन का झोपड़ा

कुतुबुद्दीन ऐबक को भवन निर्माण में भी रुचि थी। उसने दिल्ली में कुतुबमीनार, कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद और अजमेर में 'अढ़ाई दिन का झोपड़ा' का निर्माण कराया। कुतुबमीनार की शुरुआत ऐबक ने की थी परन्तु इसको पूर्ण इल्तुतमिश ने कराया।

- चित्र देखकर बताइए कि कुतुबमीनार कितने मंजिल की है ?

कुतुबुद्दीन ऐबक ने भारत में एक नये राज्य की नींव अवश्य डाली, पर उस राज्य को सुदृढ़ बनाने का अवसर उसे नहीं मिल पाया। कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु 1210 ई0 में चैगान खेलते हुए घोड़े से गिर कर हो गई।

इल्तुतमिश (1210 ई0-1236 ई0)

1210 ई0 में कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के पश्चात दिल्ली के अमीरांे ने इल्तुतमिश को गद्दी पर बैठाया। उसे ही उत्तरी भारत में तुकाी के राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। गद्दी पर बैठने के बाद उसे आन्तरिक और बाहरी समस्याओं से जूझना पड़ा। इल्तुतमिश ने चालीस गुलाम सरदारों का संगठन अर्थात तुर्कान-ए-चेहलगानी का निर्माण किया।

शासन व्यवस्था

इल्तुतमिश ने देश में एक राजधानी, एक स्वतंत्र राज्य, राजतंत्रीय प्रशासनिक व्यवस्था और अफसरशाही व्यवस्था की स्थापना की। उसने दिल्ली को भारत वर्ष में तुर्क साम्राज्य का राजनैतिक, प्रशासनिक और सांस्कृतिक केन्द्र बनाया। उसने 'इक्ता (अक्ता)' व्यवस्था के द्वारा केन्द्र को प्रान्तीय और स्थानीय शासन से जोड़ने की नींव डाली।

सुल्तान ने अपनी सल्तनत (राज्य) को कुछ प्रांतों में बाँटा। प्रांतों को 'इक्ता' कहते थे। हर इक्ते में सुल्तान अपने एक ज़िम्मेदार सेनापति को नियुक्त करता था, जिसे 'इक्तादार या

अक्तादार’ कहा जाता था।

क्या पिछली कक्षा में आपने स्थानीय शासन की ऐसी किसी सुनियोजित व्यवस्था के बारे में पढ़ा है ? सोचिए और बताइए।

इल्तुतमिश का साम्राज्य

इक्तादार के पास अपनी सेना होती थी और प्रशासन चलाने के लिए अधिकारी होते थे। इक्तादार इनकी सहायता से राज्य की रक्षा करते थे और राय एवं राणाओं से कर वसूल करते थे। अपने इक्ते से इकट्ठे किए गए कर से ही वे अपनाए अपने अधिकारियों का और अपने सैनिकों का खर्चा चलाते थे। इस खर्चे के ऊपर जो कर बचता था उसे अक्तादार सुल्तान को भेज देते थे।

हारे हुए राय.राणा अक्सर सोचते थे श्मैं क्यों अपने यहाँ का इतना सारा कर इकट्ठा करके तुर्कों को दूँ घ् मैं पहले की तरह खुद ही क्यों न रख लूँ घ् जब वे आकर मांगेंगे तब देखा

जायेगा।श् मौका देखकर राय.राणा आदि कर देना बंद कर देते थेए फिर सुल्तान या उसके इक्तादारों को ऐसे विद्रोही राजाओं व राणाओं पर हमला करके ज़बरदस्ती उनसे कर वसूल करना पड़ता था।

चाँदी का टंका

इल्तुतमिश ने मुद्रा व्यवस्था में सुधार करते हुए चाँदी का टंका और ताँबे का जीतल चलाया। 1236 ई0 में इल्तुतमिश की मृत्यु हो गयी। उसने अपने जीवन काल में ही अपनी पुत्री रजिया को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया था।

रजिया सुल्तान- प्रथम मुस्लिम महिला शासिका- (1236ई0-1240ई0)

इल्तुतमिश ने अपनी पुत्री रजिया को अपना उत्तराधिकारी बना दिया थाए परन्तु सरदारों तथा उलेमा के विरोध के चलते इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद उसका पुत्र रुकनुद्दीन फिरोज गद्दी पर बैठ गया लेकिन दुर्बल शासक होने के कारण 1236 ई0 मंे रजिया दिल्ली की गद्दी पर बैठीऔर सुल्तान कही जाने लगी।

रजिया से पूर्व प्राचीन मिस्र और ईरान में महिलाओं ने रानियों के रूप में शासन किया था परन्तु मध्यकालीन विश्व में पहली मुस्लिम महिला शासक थी।

रजिया ने लगभग तीन वर्ष आठ माह शासन किया। रज़िया ने स्त्रियों का पहनावा छोड़ दिया और बिना पर्दे के दरबार में बैठने लगी। वह युद्ध में सेना का नेतृत्व भी करती। अमीरों को शीघ्र ही पता लग गया कि स्त्री होने पर भी रज़िया उनके हाथों की कठपुतली बनने को तैयार नहीं थी। तुर्क सरदार भी किसी महिला के अधीन कार्य करने को तैयार नहीं थे। उन्होंने एक षड्यंत्र के द्वारा उसे गद्दी से हटा दिया। रजिया के बाद उसका एक

भाई एवं दो भतीजे बारी.बारी से सुल्तान बनेए जो अयोग्य थे। अतः इल्तुतमिश के छोटे पौत्र नासिरुद्दीन महमूद को दिल्ली का सुल्तान बनाया गया।

सोचिए और बताइए कि उस समय लोगों व दरबारी अमीरों ने रजिया का विरोध क्यों किया होगा घ् यदि रजिया आज शासक होती तो क्या उसका विरोध होता ?

नासिरुद्दीन महमूद (1246ई0-1265ई0)

श्चालीस तुर्की अमीरों का दलश् इस समय अत्यधिक शक्तिशाली हो गया था। वे जिसे चाहते गद्दी से उतार देते थे और जिसे चाहते गद्दी पर बैठा देते थे। 1246 ई0 में इस दल ने इल्तुतमिश के पौत्र नासिरुद्दीन महमूद को सुल्तान बना दिया।

महमूद ने एक अमीर जिसका नाम बलबन था को अपना नायक बनाया। बलबन ने धीरे.धीरे अपनी स्थिति सुदृढ़ कर ली और वह एक शक्तिशाली सरदार बन गया। 1265 ई0 में नासिरुद्दीन महमूद के बाद बलबन गद्दी पर बैठा।

बलबन (1265ई0-1287ई0)

बलबन

बलबन एक योग्य और अनुभवी शासक था। उसने अपने शासन काल में कई महत्वपूर्ण कार्य किये। उसने दिल्ली को सुरक्षित बनाने के लिए आस.पास के जंगलों को कटवाया तथा साफ करवाकर वहाँ पुलिस चौकियों का निर्माण कराया। इस प्रकार वह दिल्ली के आसपास रहने वाले मेवातियों के विद्रोह को रोकने में सफल रहा। मेवातियों के अलावा उसने अन्य विद्रोहों का भी दमन किया।

बलबन ने कानूनों को लागू करने में कठोरता बरती। उसने राजा के पद को प्रतिष्ठित बनाया। वह राजा को धरती पर ईश्वर का प्रतिनिधि मानता था। बलबन का मानना था कि राजा को ईश्वर से शक्ति प्राप्त होती है। इसलिये उसके कार्यों की सार्वजनिक जाँच नहीं की जा सकती। इससे उसकी निरंकुशता सुरक्षित होती थी। इसलिए वह दरबार में अत्यंत गम्भीर मुद्रा में बैठता था। वह न तो कभी मज़ाक करता था और न ही हँसता था। उसने दरबार में निर्धारित ढंग से वस्त्र पहनकर आनेए बैठने आदि के बारे में नियम बनाये जिनका कठोरता से पालन किया जाता था। उसने सुदृढ़ व्यवस्था बनायी जिससे राज्य की पूरी खबरें गुप्तचर सुल्तान को देते थे। बलबन की प्रमुख विशेषता थी कि उसने सदैव न्याय को सुल्तान का प्रमुख कार्य समझा। उसने शान्ति व्यवस्था बनाये रखने के लिये सेना पर भी ध्यान दिया। सैनिकों को संतुष्ट रखने के लिये उसने उनका वेतन सदैव समय पर दिया। उन्हें सक्रिय रखने के लिए निरन्तर अभ्यास पर बल दिया।

मंगोल आक्रमण

बलबन ने राज्य को बाहरी आक्रमणों से बचाने एवं मंगोलों की शक्ति को रोकने का प्रयास किया। तेरहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में एशिया और यूरोप में आक्रान्ताओं की नयी लहर आयी।

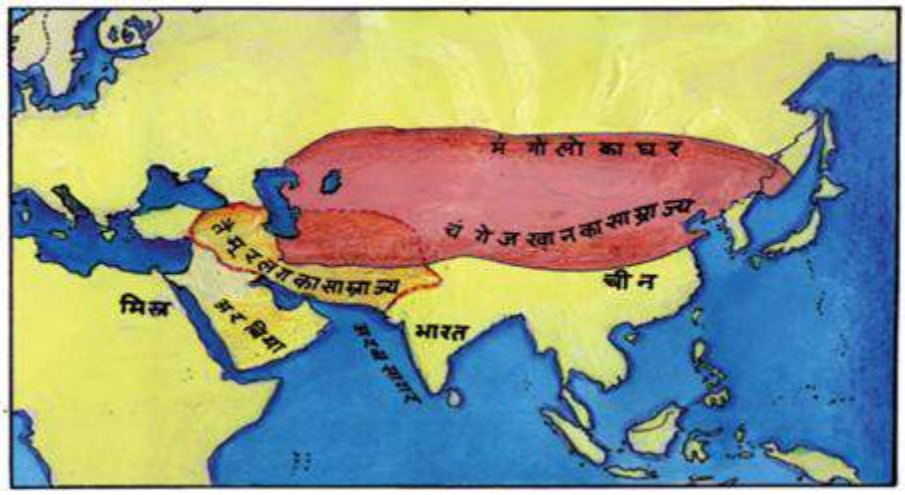

यह नये आक्रमणकारी मंगोल थे, जिन्हें उस महान साम्राज्य के लिए सबसे अधिक जाना जाता है जिसका गठन उन्होंने चंगेज खाँ के नेतृत्व में किया।

तेरहवीं सदी का अंत होते-होते मंगोल साम्राज्य ज्ञात दुनिया के बड़े भाग तक फैल चुका था। चंगेज खाँ के नेतृत्व में उनकी शक्ति बहुत बढ़ गई थी।

चाँदी का टंका

मंगोल आक्रमण की भयंकरता को बलबन भलीभाँति अनुभव करता था। इसलिए उन्हें रोकने के लिए उसने मंगोलों के मार्ग में पड़ने वाले पुराने दुर्गों की मरम्मत करवाई तथा नये दुर्गों का निर्माण करवाया। वहाँ पर हृष्टपुष्ट सैनिकों एवं विश्वसनीय और अनुभवी अधिकारियों को नियुक्त किया। शस्त्र तथा भोजन आपूर्ति की पूर्ण व्यवस्था भी वहाँ पर की गई।

फारसी शब्द 'मुगल' का उद्भव मंगोल शब्द से हुआ है।

उसकी मृत्यु के बाद दिल्ली की गद्दी पर उसके वंश का शासन अधिक दिन तक न रह पाया, परन्तु दिल्ली को जो शक्ति बलबन ने प्रदान की, उसी के परिणामस्वरूप खिलजी सुल्तान अलाउद्दीन अपने साम्राज्य का विस्तार करने में सफल रहा।

- शब्दावली

मलिक	-	सरहद और पंजाब के मुसलमानों की एक सम्मानजनक उपाधि।
इक्ता	-	प्रान्तों को 'इक्ता' कहते थे।
मंगोल	-	मध्य एशिया, तिब्बत एवं चीन के क्षेत्रों में रहने वाली जाति।

सिजदा - घुटने पर बैठकर सुल्तान के सामने सिर झुकाना

पायबोस - सुल्तान के चरणों को चूमना।

अभ्यास

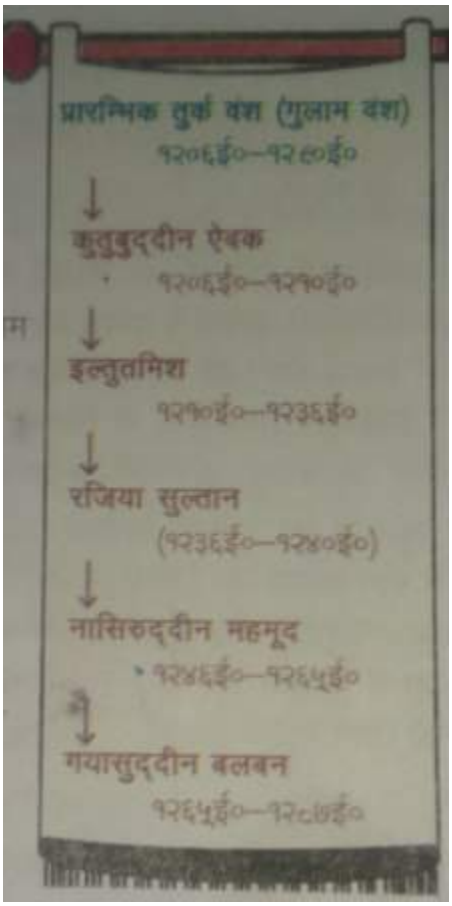

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक किसे माना जाता है ?

(ख) 'चालीस गुलाम सरदारों का संगठन' किस शासक ने बनाया ?

(ग) कुतुबुद्दीन ऐबक को लाखबख्श क्यों कहा जाता है?

(घ) दिल्ली सल्तनत में कौन-कौन से राजवंशों ने शासन किया ?

(ङ) बलबन ने मंगोल आक्रमण से बचाव के लिए क्या किया ?

2. सही मिलान कीजिए-

(क) अढ़ाई दिन का झोपड़ा	रजिया
(ख) टका एवं जीतल	कुतुबुद्दीन ऐबक
(ग) प्रथम मुस्लिम शासिका	बलबन
(घ) सिजदा और पायबोस	इल्तुतमिश

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) 'अढ़ाई दिन का झोपड़ा' ..... ने बनवाया था।

(ख) कुतुबमीनार को ..... ने पूर्ण करवाया।

(ग) प्रान्त (इक्ता) का प्रधान अधिकारी ..... कहलाता था।

(घ) इल्तुतमिश ने ..... को अपना उत्तराधिकारी बनाया।

प्रोजेक्ट वर्क

निम्नलिखित महिला राष्ट्राध्यक्ष किस देश की हैं। तालिका में लिखिए तथा सम्बन्धित देश का राष्ट्रध्वज का चित्र बनाकर रंग भरिए।

राष्ट्राध्यक्ष	देश का नाम
चन्द्रिका कुमार तुंग	
मार्गग्रेट थैचर	
जूलिया गिलार्ड	
एंजिला मार्केल	
मेघावती सुकर्णोपुत्री	
किम कैम्बल	